विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -09 - 08- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज महादेवी वर्मा जी जीवन के बारे में अध्ययन करेंगे।

जन्म	26 मार्च, 1907
जन्म-स्थान	फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश
मृत्यु	11 सितम्बर, 1987
मृत्यु-स्थान	प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
पिता	गोविन्द प्रसाद वर्मा
माता	श्रीमती हेमरानी वर्मा
पति	डॉ० स्वरूपनारायण वर्मा

महादेवी वर्मा **'पीड़ा की गायिका'** से रूप में सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री होने के साथ एक उत्कृष्ट गद्य-लेखिका भी थी। गुलाबराय- जैसे शीर्षस्तरीय गद्यकार ने लिखा है- **"मैं गद्य में महादेवी का लोहा मान्ता हूँ।"** महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद के एक सम्पन्न परिवार में सन् 1907 ई. में हुआ था। इन्दौर में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की।

इनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में ही हो गया थ ससुर जी के विशेध के कारण इनकी शिक्षा में व्यवधान आ गया, परन्तु उनके निधन के पश्चात् इन्होंने पुन: अध्ययन प्रारम्भ किया और प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम.ए् की परी खा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

वे 1965 ई. तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के रूप में कार्यरत रहीं। इन्हें उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या भी मनोनीत किया गया। इनका देहावसान 11 सितम्बर 1987 ई. को प्रयाग में हुआ।

माहदेवी वर्मा के गद्य का आरम्भिक रूप इनकी काव्य-कृतियों की भूमिकाओं में देखने को मिलता है। ये मुख्यत: कवयित्री ही थीं, फिर भी गद्य के क्षेत्र में उत्कृश्ट कोटि के संस्मरण, रेखचित्र, निबन्ध एवं आलोचनाएँ लिखीं।

रहस्यवाद एवं प्रकृतिवाद पर आधारित इनका छायावादी साहित्य, हिन्दी साहित्य की अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार किया जाता हेै। विरह की गायिका के रूप में महादेवी जी को **'आधुनिक मीरा'** कहा जाता है। महादेवी जी के कुशल सम्पादन के परिणामस्वरूप ही **'चॉद'** पत्रिका नारी-जगत् की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बन सकी। इन्होंने साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु **'साहित्यकार-संसद'** नामक संस्था की स्थापना भी की।
इन्हें **'नीरजा'** काव्य-रचना पर **'सेकसरिया पुरस्कार'** और **'यामा'** कविता-संग्रह